भजन संकलन कर्ता –

श्री रामप्रसाद गोलावदिया (शिक्षक)

मा० वि० नान्देल

निवासी – नान्देल (टोंकखुर्द)

जिला – देवास (म०प्र०)

* भजनों की सूची *

क्र.	क्र. पृ.	
	1.	गुरू सरीका देव म्हारे मन भाए
	2.	बलिहारी गुरूदेव तुम्हारी
	3.	गुरू बिना कोई काम
	4.	सतगुरू देव मनाया
	5.	सतगुरू दीन दयाल
	6.	सतगुरू बणिया भेदिया
	7.	ऐसी खेती कीजे
	8.	इणी सुरता को करनो ब्याव
	9.	निराधार होई खेलो
	10.	मेरे गुरू से मिलना है
	11.	मुरली बाजे गैरी गगन में
	12.	कहाँ से आया रे बोल तू
	13.	गुरू बिन जग अंधियारा
	14.	मगन भई वो लाडूली
	15.	घड़ी-2 वो तने बार-2
	16.	जब चढ़ा भजन का रंग
	17.	पतंग उड़ाने की छई
	18.	मियाँ तूने मस्जिद कहाँ बणाई
	19.	सुरति चढ़ा ऊपर को
	20.	जग माँगण हारा
	21.	संतो शब्द साधना कीजे
	22.	पामणा दिन चारा
	23.	मंदिर में मंदिर बणाया
	24.	बन राम का मंदिर
	25.	कोई सफा न देखा
	26.	बिन भेद बाहर मत भटको
	27.	(बनड़ा गीत) यो वर पायो
	28.	भक्ति सतगुरू आणी
	29.	मोरे सतगुरू भेद बताया

कृ. पृ. उ.

30. पंडित बांद-बदे तो झूठा
31. नर को नहीं परतीत हमारो
32. माया महाठगिनी हम जानी
33. तन धर सुखिया कोई न देखा
34. कदे आओ नीं साहेब म्हारा
35. अमल करे सो पाई
36. ऐसी चिलम पिलाई गुरा ने
37. गुरू बिन कैसे पावोगा रे
38. साधू भाई नुगरा भटक मरेवा
39. ऐसी अजर जरो मन मेरा
40. ऐसी ~~सैर्भ~~ सैण समझ मन मेरा
41. जग में करता काल नसाई
42. यहां जम की उड़े हंकवाई
43. जो तेरी इच्छा तिरवा की होय तो
44. सुरता मालण म्हारी
45. करना होय सो करले साधौ
46. मेला है पण मिलता नाहीं
47. दिवाने लागी भजन धुन लहरी
48. थारी काया नगर में बसे राम
49. मेहरम होय सोई लख पावे
50. क्या पूछे देस हमारा रे
51. वो घर सबसे न्यारा
52. खोज्या घर है न्यारा
53. वहां मेरा हंसा रेवाया
54. बाड़ अगाड़ी म्हारा वासा
55. माने कौन संदेवा अखे का
56. कोई सुणता है गुरू ज्ञानी
57. गगन पर देश हमारा
58. जो तू आया गगन मण्डल में
59. वो घर ऐसा कहिये रे अवधू
60. वो तो घर बेनाम साधौ
61. बेराग कठे है मेरा भाई

कृ. पृ. उ.

62. निर्गुण ब्रह्म है न्यारा ऐ हंसा
63. जेठ मास गरमी को रे महीनो
64. मन-पवन का हाथी चाले
65. राम-रमै सोई ज्ञानी रे साधौ
66. मोरे सतगुरू है रंगरेज बुनर
67. मोरे सतगुरू पकड़ी है बांह
68. लहरी अनहद उठी घट भीतर
69. अचरज देखा भारी रे
70. ऐसी सैण लखाई गुरा ते
71. सुन्न शिखर पर अनहद गाजे
72. प्रभु तेरो रूप अपारा कोई बिरला पावे
73. प्रभु मैं कियो विचारा तू तो
74. जग में हरिभजन ही सार
75. हरिजन हरि को प्यारा साधु भाई
76. देख्यो देव नजारी गगन में
77. निशाणा है रे निशाणा है
78. सुकरत फूल गुलाब का सब घट रया
79. जो मन शीतल होय जुग में बैरी
80. हां रे बाबा गुरू का दरियाव सागर
81. अरे भाई मरजीवा का देश है
82. मना रे भाई सभी आसमान जुगत
83. हर-2 मारूंगा निशाण साधौ
84. गुरूजी ने दियो अमर नाम
85. ले रे नाम ले रे नाम नाम से
86. अनघड़-2 देखिया हो
87. अगम बिरला जाणो साहेब तेरी
88. ज्ञान की जड़िया दई मेरे
89. साधौ भाई इस विधि ब्याव रचायो
90. गाड़ी म्हारा देश की धामे
91. आओ-2 री सखी गुरू का मंगल

92. हर-हर मान ले म्हारी कई यो
93. घरहर गगन गरजना सोहं-2
94. बणाओ अपणा सबगुरू हैली
95. गुरू बिना कौन प्रेम जल पावे
96. धन हो दीनानाथ भगत भवतारी
97. मन की आदत को काई बदले
98. म्हारे संत द्वारे आया री
99. समझले सुरत सहेलीरी वो सखी
100. सतगुरू शरणें चालो सैंया म्हारी
101. म्हारे छाड़ी गयो रे लारा लई
102 सतगुरू हमको भाया साधौ
103. छोड़ी ने मती जावजो बणजारा रे
104. साधौ भाई पहले थारो मन

* गुरू बंदना *

ध्यायेत सद्गुरू श्वेतरूपममलम

श्वेताम्बर शोभितम । कर्णकुण्डल श्वेत शुभ्र मुकुटम

हीरामणि मण्डितम । नानामाल मुक्तादिशोभित गला

पद्मासने सुस्थिरम । दयाब्धि धीरं सुप्रसन्न वदनम्

सदगुरूं तन्नमामि ।। । ।।

द्वे पदम् , द्वेभुजम प्रसन्नवदनम् द्वे नेत्रम दयालम ।

शैली कण्ठ गाल उर्ध्वतिलकम् श्वेतांबरी मेखला ।।

चक्रांकित सिर टोप रत्नखर्चितम् द्वे पंचतारा धरम ।

वंदेतु सदगुरू योग दण्ड सहितं कबीरं करूणामयम्

ध्यान मूलम गुरू मूर्ति, पूजा मूलम× म् गुरू पदम् ।

सर्व मूलम गुरू वाक्यं मोक्ष मूलम गुरू रूपा ।।

गुरू मूर्ति मुख चन्द्रमा सेवक नैन चकोर ।

अष्ट पहर निरखत रहूं मैं गुरू चरणन की ओर ।।

==

1\. निजमन माना नाम सौ नगरि न आवे दास ।

कहे कबीर सो क्यों करे, राम मिलन की आस ।।

ऐसा कोई न मिला सतनाम का मीत ।

तन-मन सौंपे मिरग ज्यों सुने बधिक का गीत ।।

गुरू सरीका देव मेरे मन में भावे मेरे मन भावे,

गुरू काटे भरम की जाल जीव सुख पावे । टेक ।

या गुरूजी की सैण समझ सुख पावे ,

वो नर संत उरध के बीच सुजान जीव उलटावे ।।

इंगला-पिंगला नार सुषमना म× धावे ।

अ×र्ध×अरध-उरध के बीच मन ठहरावे ।।

ऐसा अखण्डित अखण्डित नाथ है चराचर ध्यावे ।

सकल ब्रम्ह के माय वेद म यूं गावे ।।

बोले ईश्वरदास भरम भगावे ।

तो नर संत सुजान परम पद पावे ।।

==

2. गुरू सयाना शीष में शीष किया करि नेह ।
बिलगाए बिलगे नहीं एक प्राण हुई देह ।।
ज्ञान प्रकाशी गुरू मिला सौ जनि बिसरो जाय ।
अब गोविन्द कृपा करि तब गुरू मिलया आय ।।
बलिहारी गुरूदकव आपकी बलिहारी । टेक
लव भारी-लव भारी हो गुरूदेव आपकी बलिहारी ।।

जुगा-2 को सोयो म्हारो हंसो सतगुरू लियो जगाय ।
शब्द की सुणकारी-2 हो गुरू ।। । ।।
आप नी होता संसार में म्हारी कौन करतो सहाय ,
भोगतो दुःख भारी, दुःखभारी-2 हो गुरूदेव ।। 2 ।।
तन-मन धन कुर्बान करूँ यो मोतीड़ा से चौक पुराऊँ ,
गुरूजी या लव भारी , लवभारी-2 हो गुरूदेव ।। 3 ।।
दास धरमजी विनती यो दुर्बल करे हे पुकार ,
अरज एक सुण म्हारी, सुण म्हारी-2 हो गुरूदेव ।।4।।

===

3. गुरू नारायण रूप है गुरू ज्ञान को घाट ।
सतगुरू वचन प्रताप सो मन के गिरे उचाट ।।
गुरू सेवा जन बंदगी हरि सुमरण बैराग ।
ये चारों तबहि मिले पूरण होवे भाग ।।

गुरू बिना कोई काम न आवे ,
कुल अभिमान मिटावे-2 सतलोक पहुँचावे ।। टेक ।।

नारी कहे मैं संग चलूंगी, ठगनी ठग-2 खाया है ।
अंत समय मुख मोड़ चली है तनिक साथ नहीं दीना है ।।
कोड़ी-2 माया जोड़ी, जोड़ के महल बनाया है ।
अंत समय कछु काम न आवे खाली हाथ तू जाता है ।।
जतन-2 कर सुत को पाला, लाड़ अनेक लड़ाया ।
तन की लकड़ी तोड़ लियो है लांबा हाथ लगाया है ।।
भाई बंधू थारा कुटुंब परिवारा, धोक में जीव बंधाया है ।
कहे कबीर सुनो भाई साधो, सतगुरू बंध छुड़ाया है ।।

===

4. सतगुरू शब्द सब घट बसे कोई न पावे भेद ।
समुंद बूंद एमें भया काहे करहू निषेद ।।

सतगुरू देव मनाया सैंया सतगुरू देव मनाया है । टेक ।
उगा भाग भला पिव आया आनंद उर में छाया है ।। टेक
चित का चौक पुराया गुरू का मांडण मांड मंडाया है ।
प्रेम मगन होई अनुभ्व जाजम सत का पाट बिछाया ।।
सुरत सुहागण करे आरती गुरूगम ढोल बजाया है ।
गगन मण्डल में सेज पिया की सुरता पवन हिलाया ।।
सुरत-नुरत मिलत पीव दरसे शिव में जीव समाया है ।
त्रिकुटी का रंग महल में सतगुरू फाग रमाया है ।।
ज्वाला पुरी हो समरथ दाता केवल पद दर्शाया है ।
मोहनपुरी या स्वरूप समाधि आप में आप समाया है ।।

सतगुरू दीनदयाल ऐसा आओ म्हारे द्वार ।

निशदिन जोऊ में बाटडली व्याकुल करूं पुकार ।
प्यारे जीव की प्यास बुझाओ प्रेम पुरूष करतार ।।
उत्तम जिज्ञासा मन में मेलो मेटो विषय विकार ।
ज्ञान भाण उर में प्रकासो मिटे रैण अंधियार ।।
मोहनपुरी हो गुरूजी तमने बार-2 बलिहार ।
के भगवान सुणो नारायण नेम धरम उर धार ।।

==

5. सतगुरू सत का शब्द है सत दिया बतलाय
जो सत को पकड़े रहे सत हि मxxx माटी समाय ।।
सतगुरू अमृत बोईया विष खारा हो जाय ।
नाम रसायन छोड़ में आक धतूरा खाय ।।
म्हारा xx सतगुरू बणिया भेदिया है, नाड़ी पकड़ी रे हां
उण नाड़ी में लहर उपजे हियो हिलोड़ा खाय ।।
म्हारा सतगुरू आंगन रूखड़ी रे लीनो रे सब कोय ।
औगुण उमर गुण करे वो सभी पाप झड़ जाया ।।
गुरू म्हने चेतन कर गया , म्हारा तन बिच दियो लखाय ।।
भाव रूख फूले घणो रे फैली रयो चौफेर
भरी सभा में बाट जोऊ म्हारी आनद सभा में बाट जोऊ
म्हारा बट्या घणा होय गुरू चेतन कर गिया ।।
म्हारा सतगुरू सोना सोलयो रे रति जो लागे काज ।
सतगुरू भाला रोपिया म्हारा दीनगुरू xxxx भाला रोपिया ।।
म्हने लगे कलेजा का माय गुरू म्हने घायल कर गया ।।
मन मोइनो चोर लो रे इणी सुरता रो करलो तार ।
सेवा गुरू अमृत रो प्यालो xxxx दीयो खीमा ने पिलाय ।।
गुरू म्हने ज्ञान दई गया म्हारा तन बिच दियो लखाय ।
सुमरण चेतन कर गया ।।

==

6. ऐसी खेती कीजे मना जाको काई के मत दीजे ।। टेक
काम क्रोध का काटो रे जाला करम कुटाड़ी लई xx लीजे ।
ठूंठ-ठांठ रेणे नहीं पावे सफल खेत कर लीजे ।। 1 ।।
हीबड़ा की तू हाल बताइले मन रमण कर लीजे ।
मन-पवन दोई बैल बणइले सुरता की रासा कीजे ।। 2 ।।
प्रेम बास का करले दाता करम कुंडला लीजे ।
घांस-फूंस रेणे नहीं पावे सफल खेत कर लीजे ।। 3 ।।
आशा-तृष्णा की करले डांडी ज्ञान गांगड़ो लीजे ।
राम-नाम लई मोरत कीजे जुग से जोतई लीजें ।। 4 ।।
इंगला-पिंगला की नई बणइले सुखमण बीज बोबाजे ।
कहे कबीर सुणो भाई साधो जाये हीरा मोती xxxx लिहाजे ।।

==

7. इणो सुरता को करनो है ब्यान जोड़ी को वर ना मिले ।
जिनका हिरदा बड़ बड़ा रे कठोर उनसे तो माइलो न मिले ।।
ऐसी सुन्न से चढ़ी है बरात शिखर शिखरगढ़ आबकिया ।
ऐसा आया औघट-घाट त्रिवेणी में न्हाविया ।। 1 ।।
ऐसा बाज्या जंगी ढ़ोल नगारा बाजिया ।
या सुन्न से चढ़ी है बराम समेला सा साधिया ।। 2 ।।
बनो-बैठो बनी के पास हाथीवाला जोड़िया ।
जिनका रूप है अ अतिरूप रूप देख हरसिया ।। 3 ।।
इणी सुरता को करे जो ब्याव वही मेरी सिरधणी ।
ऐसा सही-2 कहे कबीर बहु नहीं आवणी ।। 4 ।।

==

8. परखावत परखे सदा सतसंग के बीच ।
ताको हमारी बंदगी : रहे ना कीच ।।
पारख-पारखी है एक है बिना भेद कुछ नाहीं ।
देह विलास करि भेद है, सतगुरू दियो दरसाई ।।

निराधार हाई खेलो रे साधो भाई -2
खेलत-खबर खोज न पाई अगम-निर्गम के हेलो । टेक
काया तोड़ त्याग दे तन को सैण गुरारी लेवे ।
पाप पुन्य दोनो के पपसे करदे मूल उर खेले ।। 1 ।।
चवदा लोक चरणा रा चाकर बाधि पवन के होले ।
आदि अंत में उनके माती उनके ठोकर ठेले ।। 2 ।।
सात भौम सुरत पर थाके चौथे पद न आले ।
सुन्न को छेद अंकुर सुन्न सेवे पड़जाय सीधे गेले ।। 3 ।।
सतगुरूजी म्हने पुरा मिल गया नहीं सपने में लेवे ।
कहे कबीर सुनो भाई साधो सबको सतलोक लेवे ।। 4 ।।

==

9. जो जानेहु जीव आपणा करहुँ जीन को सार ।
जीयरा ऐसा पहुना मिले न दूजी बार ।।
जीव बिना जीव बचे नहीं जीव को जीव आधार ।
जीव दया करि पालिये पण्डित करो विचार ।।
क्षर औंकार सु कहत है अक्षर सोहं जाण ।
निःअक्षर श्वांसां रहित साही को मन आन ।।
ओहं को काया भई सोहं सो मन होय ।
निःअक्षर खासा भई धर्मदास मन जोय ।।
श्वांसा सो साहं भयो साहं सो औंकार ।
ओहं सो ररां भया धर्मनि करहुँ विचार ।।
चार वेद को भेद है गीता को है जीव ।
धर्मदास लख आप में सोये तेरी पीव ।।
मेरे गुरू से मिलना है यार सतगुरू
मैं तो नशे में खूब यार मेरे गुरू से मिलना है ।। टेक ।।
इस लोभ-लालच को त्याग हमें फकीरी लेना है ।
इस भवसागर को जीत हमें मेजत में जाना है ।। 1 ।। मैं तो ...
इस हद को छोड़ बेहद में जाना है यार हमे ।
मूल सुंदरी मकर तार जहां मणी चमकती है ।। 2 ।। मैं तो .....
सफेद महल दिख दिख रहा बिखम का चढ़ना है ।*
सफेद सेज फूलों की वहां पुरूष पाया है ।। 3 ।। मैं तो ....
इस मूल सुंदरी की प्यास जगी अमृत का दीना है ।
कहे कबीर सुनो भाई साधो, बस इसी से तिरना है ।। 4 ।।
मैं तो नशे में खूब यार सतगुरू से मिलना है ।

==

10. बूँद पड़ी जा पलक में उस दिन लिखिया लेख ।
मासा घटे न तिल बढ़े जो सिर कूट अनेक ।।
प्रारब्ध पहले बना पीछे बना शरीर ।
कबीर अचंबा है यहीं मन नहीं बाँधे धीर ।।
कबीर रेखा करम की कबहुँ न मिटी है राम
मेटनहार समर्थ है समझि किया है काम ।।
आकाश जा पाताल जा कोई जाऊ बेम्हाण्ड ।
कहे कबीर मिटो है नहीं देह धरे का दंड ।।
मुरली बाजे मैरी गगन में मुरली बाजे मेरी ।
सुनके मन मगन होई जावे दुविधा मिट गई सारी ।। टेक ।।
मुरली बाजे मेरी ......
बिन पानी एक बहती गंगा बिन आगी उड़े पतंगी ।
क्षतपती तापे बिना अगा से बिना कठ राग है जारी ।। । ।।
मुरली बाजे मेरी ....
बिना रे तेल बिना रे बाती से दिवला जले दिन राती ।
शोभत वाकी रे कही न जावे बिना भाण उजियारी ।। 2 ।।
मुरली बाजे मेरी ....
कर बिना ताल पखावत बाजे बिन पग निरत दिखाई ।
बैहरा सुण के बहुत सुख पावे अचरज खेल है भारी ।। 3 ।।
रे साधौ भाई मुरली बाजे मेरी .....
यो भेद है कठिन कटारी स्वर खोज की धारी ।
कहे कबीर वो पिया की प्यारी खूब गई अगम किवारी ।। 4 ।।
रे साधौ भाई मुरली बाजे मेरी ।।

==

11. तैतीस कोटि देवता गण गंधर्व गंधर्व सब झार ।
सुर-असुर सबही थके लीजा नाम अपार ।।
बिन देखे को जाय यह नहीं पाछे कोई गम
जनम उनके भरमत फिरे मरे बिन गुण के नाम ।।
आदि पुरूष अगम है जाको सकल प्रकाश ।
निगुर्ण भेद अपार है तुम कहँ बांधी आस ।।
कहाँ से आया रे बोल तू -2
कहाँ से आया कहाँ जाओगे कहाँ ठिकाना पाया रे हंसा ।।
शेष-महेश , गुणेश न होता जियाजंद कहाँ रेता संतो रे भाई
वा दिन की तुम कहो निशाणी किस विध हुआ पसारा हंसा ।।
धर-अम्बर धुरण नहीं होता चांद नहीं था सूरज संतो रे भाई ।*
वा दिन की तुम कहो निशानी किस विध हुआ परवारा हंसा रे ।।
पांच तत्व तीन गुण न होते नहीं होता औंकारा संतो ।
वा दिन की तुम कहो निशाणी कैसे हुआ पसारा हंसा
इसी खण्ड एक पार खंड है अगम महल का झण्डा संतो रे भाई ।
कहे कबीर सुनो भाई साधौ वा कहं× कटे काल का फंदा हंसा ।।
कहाँ से आया रे बोल तू ।

==

12. कोई जानेगा जानन हारा साधौ हरि बिन जग अंधियारा
साधौ गुरू बिन जग अंधियारा (अन्तरा)

या घट भीतर सोना चांदी याही में लगा बजारा
या घट भीतर हीरा मोती याही में परखनहारा साधौ ।।
या घट भीतर सात समुंदर याही में नदिया नारा
या घट भीतर सूरज चंदा याही में नौलख तारा साधौ ।।
या घट भीतर मथुरा काशी याही में गढ़ गिरनारा
या घट भीतर तीन लोक है याही में सिरजन हारा साधौ ।।
या घट भीतर राम रहीमा याही में कृष्ण करीमा ।
कहँ कबीर सुणो भाई साधौ याही में गुरू हमारा साधौ ।।

==

13. मगन भई वो लाड़ली मगन भई पिया की सूरत देख ।
हेली म्हारी पाँच तत्त गुण तीनो भेला उनका काम नहीं
पाँच पच्चीस सभी से न्यारा चेतन पुरूष सही ।। 1 ।।
हेली म्हारी नव द्वार दस त्रिकुटी जगना इनका काम नहीं ।
ऐ अष्ट चक्कर को भेंट सकेरी उनसे पार नहीं ।। 2 ।।
हेली म्हारी अपरम्पार नहीं उनका कछु नहीं जाण कही ।।
ई भागवत गीता शास्तर वाली वो भी थाक रही ।। 3 ।।
हेली म्हारी राम भारतीजी सामरथ मिलगया सांची सेण कहीं
ई कल्याण भारती संतों के xxxx×अx शरणें आगे दौड़ नहीं ।। 4 ।।
घड़ी वो घड़ी तने बार-2 समझाऊं दीवानी हो
दिन रह्यो थोड़ो तन खोयो जमारो हो ।। 5 ।।
हेली म्हारी असंग जुगारा माय भरम का तू खोजी लीजे xxx तलाई हो
हेली म्हारी काल करोध अपर बल जोधा जगपे घर दे अंगारो हो ।।
हेली म्हारी xxxxx×x×xxx बढ़ती जवानी के माय दिल में कालो दाग लगायो हो
हेली म्हारी धरयो नटता को भेष नार तू तो घर-2 डोले हो ।
हेली म्हारी गढ़ पाटन का सैर साहेब ने हाट लगायो हो ।
हेली म्हारी xxxx xxxx सुगरा सांगस सौदा करि चल्या जुगरा भूज गमाया हो×
हेली म्हारी कह गया भवानीनाथ संत कोई होया मतवाला हो ।।

== ==

14. जब चढ़ा भजन का रंग पतंग तेरा
खूब टूटा बजरंग । (अन्तरा)

चार युग की यारो खानी निर्गुण दीना रंग
अगम ज्ञान की x किवाड़ी लगा के तब किया सोहंग ।
मन बुद्धि का मांजा सुतलो अद्बुद्धि लोहंग
कटी पतंग तेरा एक ही रील से ढ़ंग हुआ बेढ़ंग ।
पाँच तत्त्व का रंग नी लागा दिल दिया खुशरंग
सोहं शब्द की डोरी लेके चढ़ा सूरज के संग ।
निर्गुण रंग का रहता बांका सुनके होवे हैं दंग
कहे कबीर सुणो भाई साधौ श्री गुरू लीजो संग ।

======== ==

15. चलो संत मेरे भाई
मेरी पतंग उड़ाने की धाई ।।
पतंग पसारा चौक में सर्वजीव की किमड़ी लगाई
त्रिगुण की तो काणी बंद कर पतंग गगन में उड़ाई ।। 1 ।।
सड़वीकार श्वांसा जो मन है श्वांस-2 ठहराई ।
सोहंग शब्द की डोरी साध के चंदा सूरज संग जाई ।। 2 ।।
पांच तत्व का रंग मिला के सुन्न शिखर चढ़जाई
सोहंग शब्द का गांजा सुतलो तो कटने की धसत नाहीं ।। 3 ।।
नाथ बिंद एक मांजा धिराजो निरंजन पतंग उड़ाई ।
कहे कबीर सुनो भाई साधो हंस पतंग उड़ जाई ।। 4 ।।

==

16. मिया तूने मस्जिद कहां बणाई । टेक
पत्थर काट तस्वीर बनाया , कपट-2 के हाथ डुलाया ।
दिल का तस्वीर तो खोजा नाहीं वा तस्वीर नहीं पाई ।। 1 ।।
कण-2 चुनके रोजा बनाया , उल्टी औंदर पड़ जाई ।
तेरा साहेब तुझमें बंदे , बाहर काहे कोह जाए ।। 2 ।।
पाक भया जब कटी मुर्गी, गले बीच छुरी चलाई ।
कटता जीव दया नहीं आई, काजी नहीं रे कसाई ।। 3 ।।
कच्चे मांस को पक्का कहत है , पक्के की उत्पत सुन भाई ।
रज बिंद का मांस बर्णा है जाण बुझ कर तुम खाई ।। 4 ।।
तेरा मालिक तुझमें रे बंदे बाहर काहे गुर्राई ।
कहे कबीर खोज दिल अपणा सो आप ही सदा हो नाई ।

==

17. सुरति चढ़ा अमर को भाई , दया करि गुरूदेव ने तो नाभी में से सुरंग लगाई ।।
खिड़कियां सारी बंद करके , चेतन चिराग जलाई ।
बंक बांट को चला साध के , सोहंग-2 रट माहीं ।। 1 ।।
पहला मुकाम सुन्न में कीन्हा, सोहंग दिया सवाई ।
सुमत बूंद नित मोती बरसे , संतो ने लूट मचाई ।। 2 ।।
बिना गुरू भेद हाथ नहीं आवे , पच-2 के मर जाई ।
कहे कबीर सुणो भाई साधो, अजब ज्ञान दर्शाई ।। 3 ।।

==

18. संतो शब्द साधना कीजे , जेहि शब्द से राम प्रगट सोई शब्द लख लीजे ।

शब्दहि वेद पुराण बब बखाने, शब्द ही शब्द ठहरावे ।
शब्दहि वो सुर-नर मुक्ष मुनि गावे , शब्द का भेद न पावे ।। । ।।
शब्दहि गुरू शब्द सुनि शीष भये, शब्दहि बिरला बूझे ।
सोई गुरू सोई शिष्य आत्मा, अन्तरगत जब ब सूझे ।। 2 ।।
शब्दे-शब्द , शब्द बहु ब अअन्तर, सार शब्द मथि लीजे ।
कहे कबीर जेहि सार शब्द नहि, धिक जीवन जग लीजे ।। 3 ।।

==

19. गरव करे सो गवारा जो बन धन पागणा । टेक
दिन चारा है पागणा दिन चारा गोबन धन ।।

पाँच तत्व का बना पींजरा, भीतर भरिया भंगारा है ।
अमर रँग सुरँग चढ़ाया, कारीगर मरतारा जोबनधन ।। । ।।
पशु चाम केरी बणी पनैया, नौबत गड़िया नगारा है ।
नर तेरी चाम नहीं आवे , बल-गल होवे अंगारा जोबन ।। 2 ।।
रावण केरी बीस भुजा ने दस मस्तक कहिये, कुटुंब घणा परिवारा है ।
ऐसा बड़े-2 जोधा गरब माही गलिया, भवसागर केरि धारा जोबन ।। 3 ।।
यो संसार ओस वालू माती, ढरक जाए बहु बारा है ।
कहं कबीर सुनो भाई साधौ, भवजण अ उतरो पारा जोबन ।। 4 ।।

==

20. मंदिर में मंदिर बणाया रे साधौ भाई
मंदिर में मंदिर तैयार किया है कुदरत क्या दिखाया
रज वीरज का मेला रे होय के मंदिर का अंदर बणाया
बात-चीत का ढांच फैलाके पच्चीस का रंग लाया है× ।
नव मास में तैयार हुआ है दसवे में बाहर आया
इणा मंदिर क की देख बनावट सबके मन को भाया ।
बड़े भाग से मिला ये मंदिर विषय में जीव भुलाया
विरथामल×लू×खोब×बरबे मत तू खोय यामे ब बस्त्र वरत रही माया रे साधौ ।
जो कोई सेवा करे मंदिर की तो बहुत आनंद सुख पाया ।
कहे कबीर सोहं को जप ले तो ब्रम्ह में जाय समाया ।।

==

21. काया राम का मुं मंदिर साधौ भाई तन राम का मंदिर । टेक
इणा मंदिर की शोभा प्यारी शोभा अजब है सुंदर साधौ ।
इणा मंदिर में उन्मुख कुबला वहां है बात समुंदर
जो सत इमरत पिवे कुंए से बाके भाग बुलंदर
अनहद घटा बजे रे मंदिर चढ़ि देखो सुन्न अबर
अखण्ड रोशनी होवे दिनराती जैसे रोशनी चंदर ।।

==

22. कोई सफा न देखा दिल का रे साधौ भाई
खेल देख झिलमिल का रे साधौ भाई ।
बिल्ली देखी बगुला रे देखा सरप न देखा बिल का
उपर-2 सुंदर लागे भीतर गोला मल का रे साधौ भाई
काजी देखा मुल्ला रे देखा पंडित देखा छल का ,
औरन को बैकुण्ठ बतावे आप नरक में सरका रे ।।
मोह की फांस पड़ी है गले में भाव करे नारिन का
काम-क्रोध दिनरात सतावे लानत ऐसे तन का रे ।।
सतनाम की मूठ पकड़े छोड़ो कपट सब दिल का
कहे कबीर सुणो सुलताना पैरो फकीरी खलका रे ।।

==

23. बिना भेद बाहर मत भटको बाहर भटके है माई ।
अड़सठ तीरथ यहां बताऊं कर दरषण थारी दी माई ।। टेक
पांवों में तेरे पदम बिराजे पिंडल में भदनिवा माही
गोड़े में गोरख का वासा हिल रहा दुनिया नाही ।
माथे में जगदीश बिराजे कमर केदारथ याही
देही में देवी का वासा अखंड जोत जलती याही ।।
हाथ बने हस्तिनापुर नगरी उंगली बनी पांचों पाण्डव
सीने में हनुमान विराजे लड़ने से डरता नाहीं ।।
मुख बना तेरा मक्का मदीना नाक की दरगा है याही
कान बने कनिकापुर नगरी संत वचन सुनले याही ।।
नेत्र बने तेरे चंदा सूरज देख रहा दुनिया माही
कहे कबीर सुणो भाई साधौ लिख्या लेख मिटता नाहीं ।।

==

24. यो वर पायो वो दीवानी पायो री

म्हारी सुरत सुहागन नवल बनी साहेब पायो री ।

भटकत-2 सब जुग भटका आज कौ औसर आयो है री

आज कौ औसर चुक जाओगे फिर नहीं ठिकाना पावो ।

राम नाम का लगन लिखाया सतगुरू ब्याव रचायो

साँई सबद लई वाये मिल गया तोरण विद झड़ायो ।।

प्रेम की पीठी सुरत की हल्दी नाम को तेल चढ़ायो

पाँच सखी मिल मंगल जावे मोतीया मंडप छायो ।।

सतनाम की चंवरी रचाई ने पड़लो प्रेम सवायो

अविनाशी का जोड़्या हथेला ब्रम्हा लगन लिखाये ।

रंगमहल में सेज पिया की आडे सुरत सवायो

अब म्हारी सुरता लागी साहेब तो सब संतन मिल xx पाये

चौरासी का फ़ेरx फेरा फेरकर बिंद परण घर आयो

कहे कबीर सुणो भाई साधौ हंस बधावो गायो ।।

==

25. भक्ति संतोगुरू आपी म्हारा साधौ भाई ।

नारी एक पुरूष दोई जाया बूझो पंडित ज्ञानी । टेक

पहाड़ फोड़ एक गंगा निकली, चहुं दिश पाणी-2

उणा पाणी में दोई पर्वत डूबे , दरिया तो लहर समाणी ।। । ।।

उड़ माखी तरवर को लागे; बोले एको बाणी ।

उणी माखी को काई मxxx मारवा नाहीं, गरम रहा बिना पाणी ।। 2 ।।

नारी एक सकल जग खाया, यासे रहत अकेला ।

कहे कबीर जो अबकी बूझे, सोई गुरू ने हम चेला ।। 3 ।।

==

26. मोरे सतगुरू भेद बताया मोरे साधौ भाई
बिरखा आगमम चढ़ी आई ।।
पूरब दिशा से चली पुरवाई बेहर समाई
फरर फरस उड़े ये फुहारा, अखण्ड धार बरसाई ।
सुदर मोर पपईया रे बोले कोयल शब्द सुणाई
नहीं कोई चाव नहीं रे कोई बिजला फरर-2 धौराई ।
थारी नाभिकमल बिच हौद भर्‍या है, पदिया अगम चढ़ आई ।
उलट-सुलट बह रही है नदिया, थारा रंग महल के माही
काननदास गुरू सुध पूरा मिल गया , हीरा री खान औलखाई ।
रामदासजी ने बाणी परख लिया, भक्ति राम गुण गाई मोरे साधौ भाई
बिरखा जोर चढ़ि आई ।

==

27. पंडित और मसालची दोनो को सूजत नाहीं-2 ।
औरन को करे चांदना आप अंधेरे के माई ।।
पंडित केरी पोथियां ज्यों तीतर की जान

पंडित बाद बदे सो झूठा । टेक
राम के कहे जगत गति पावे, खांड कहे मुख मीठा । टेक
पावक कहे पांव जो डाहे , जल कहे त्रसा बुझाई
भोजन कहे मुख जो भांजे , तो दुनिया तर जाई ।। । ।।
नर के संग युवा हरि बोले , हरि परताप नी जाना ।
जोत नहीं उड़ जाय जंगल में , तो हरि सूरत न आनी ।। 2 ।।
बिन देखे बिन अरस-परस बिनु, नाम लिये क्या होई ।
धन के कहे धनि जो होवे, निर्धन रहे न कोई ।। 3 ।।
सांची प्रीत बिसरा माया सो, हरि भक्तन की फांसी ।
कहे कबीर एक राम भजे बिनु, बांधे जमपुर जासी ।। 4 ।।

==

28. जस कथनी तस करनी, जस चुम्बक तस जान ।
कहत कबीर चुंबक बिना क्यों जीते संग्राम ।।
जैसी कहे करें सो तैसी, राग द्वेष निवारे निसवारे ।
तामें धरे बैठे रतियो नहि यहि विधि आप निसवारे ।।

नर को नहीं परतीत हमारी झूंटा बनि कियो झूटे संग पूंजी सब मिल हारी ।
षट दर्षण मिल पंथ चलायो, तिर देना अधिकारी ।
राजा देश बड़ो परपंथी, रहत-2 उजारी । ।। । ।।
जाते उत उतते इत रहहु, राग की सांड सवारी ×कपि×डोर×बांध×
ज्यों कपि डोर बांध बाजीगर, अपनी खुशी परारी ।। 2 ।।
इटे पेड जपति परलै का , विषया सबै विकारी ।
जैसे श्वान अपावन राजी, संझारी।। 3 ।।
कहहि कबीर यह अद्बुध ज्ञाना, कौ माने बात हमारी ।
जहू लेहू छुड़ाय काल सौं, जो करे सुरतु संभारी ।। 4 ।।
==

29. सारथी कहे गुहे नहीं चाल-2 ना जाय ।
सलिल धार नदिया बहे पांव कहां ठहराय ।।
कहन्ता तो बहुते मिला, करन्ता न मिला न कोई ।
सो करन्ता बहि जान दे जो न गहन्ता होत । ।

माया महा ठगनी हम जानी ,
तिरगुन फांस लिये कर डोले बोले मधुर बानी ।।
केशव के कमला होई बैठी, शिव के भवन भवानी ।
पण्डा के मूरत होई बैठी, तीरथ हूं मैं पानी ।। । ।।
योगी के योगिन होई बैठी, राजा के घर रानी ।
काहू के हीरा होई बैठी, काहू के कोड़ी कानी ।। 2 ।।
भक्तों के भक्तिन होई बैठी, ब्रम्हा के ब्रम्हाणी ।
कहं कबीर सुणो हो संतो, ये सब अकथ कहानी ।। 3 ।।
==

30. नग पाषाण जग सकल है, पारख गिरजा ×××× कोय ।
नग तो उत्तम पारखी, जग में बिरला होय ।। 1 ।।
साहू चोर चीन्हे नहीं अंधा मति का हीन ।
पारख बिना विनाश है करि विचार होहु भीन ।। 2 ।।

जन, घर सुखिया कोई न देखा, जो देखा सो हु××××××××× दुखिया हो ।
उदय अस्त की बात कहत हैं, सबको किया ×××× विवेका हो ।। 3 ।।
बाटे-2 सब कोई दुखिया, क्या गिरही बैरागी हो ।
शुक्राचार्य दुख ही के कारण , गर्भ ही माया त्यागी हो ।। 4 ।।
जोगी संगम से अति हु×××× दुखिया, तापस के दुख हुआ हो ।
आशा-तृष्णा सब घट व्यापें, कोई महल नहीं सूना हो ।। 5 ।।
सांच कहो तो सब जग खीजे, झूंठ कहा नहीं जाई हो ।
कहहिं कबीर तई भौ दुखिया, ब×××ई जिन यह राह बताई हो ।।

==

31. मारी मरे कुसंग की केवा साथे बेर ।
की हाके वे चींधरे, विधना संग निचेर ।।
जिभ्या केरे बंध दे बहु बोलन निरवार ।
पारखी से संग करूं गुरुमुख शब्द विचार ।।
जाके जिभ्या बंद नहीं हृदया नाहीं सांझ ।
ताके संग न लागिये, धाले बढ़िया मांझ ।।

कदे आओनी साहेब म्हारा देश में मैं जोऊं याकी बाटड़िया ।।
वाही देश की बातां सारी× न्यावे संत सुगान ।
उन संतारा चरण पखारूं, तन मन धन कुर्बान ।।
वाही देश री बातां म्हाने सतगुरू आण कही ।
अष्ट पहर मैं निरखत हारा नैना सूं नीर बही ।।
भूल गई मैं तन मन सारैं, व्याकुल भ्यो शरीर ।*
फिर पुकारे विरहिणी रे ढुलकत नीर बही ।।
धर्मदास को सतगुरू साहेब पल में करि निहाल ।
आवागमन की कट गई डोरी म्हारो मिट गयो भरम ×× जंजाल ।।
साधु भ्या तो क्या भ्या बोले नहीं विचार ।
हते पराई आत्मा नीम बांधि तलवार ।।
मधुर वचन है औषधि कटुक वचन है तीर ।
श्रवण द्वार होय × संचरे साले सकल शरीर ।।

32. जानत बूझत नहीं बूझ किया नहीं गौन ।
अंध को अंधा मिला, पथ बतावे कौन ।।
जानता जब बूझिया , पैंडा दिया बताय ।
चलता-2 तहां गया जहां निरंजन राम ।।

साधौ भाई अमल करे सोही पाई ,
जब लग अमल नशा नहीं करता तब लग मजा नहीं आई ।
आदो हाथ लियो कर दीपक , कर परकाश दिखाई ।
औरों के आगे करे चांदणो, आप अंधेरे के माई ।। । ।।
आंदो आप अदर नहीं दरते , जग में भलो कराई ।
दूत पूतरा दानी बनकर, पाखंड पेट भराई ।। 2 ।।
काजी मुल्ला पढ़-2 हारा , तो भी पार नहीं पाई ।
भणिया-गुणियां पण्डित भूल्या, ऐने कुण समझाई ।। 3 ।।
दोई कर जोड़ माली लिखे लिखमोजी, सब संतो के मन भाई ।
है कोई ऐसा फक्कड़ जग में, जो अपणा अमल जमाई ।। 4 ।।

==

33. गुरू कर्म ने गम कही भेद दिया अरथाय ।
सुरति कवल के बंतरे, निराधार पद पाय ।।
बलिहारी गुरू आपकी घड़ी-2 सौ बार ।
मानुष से देवता किया, करत न लागी बार ।।
गुरू ने एकसी चिलम पिलाई दाता ने
खीचे दम निर्भय होई जाई काल-जाल न साई ।।

ज्ञान का गीजा तत्व तम्बाखू
अनुंभव जल से बनाई ।
चित की चिलम करम का कंकर ये वस्तु पाँच मिलाई ।। । ।।
सतगुरू भोले साहब हमारे संत को चिलम पिलाई ।
गुरू ज्ञान की धुण्डी जलाकर, सुरता साकी लगाई ।। 2 ।।
अइसे पियेगा कोई गुरू का प्यारा तन मन प्रेम लगाई ।
सुरतदास सतगुरू चरणन में, एक ही दम लगाई ।। 3 ।।

==